

पंच का ईमान



पंच काईमान

पंच का ईमान

(लघु नाटक)

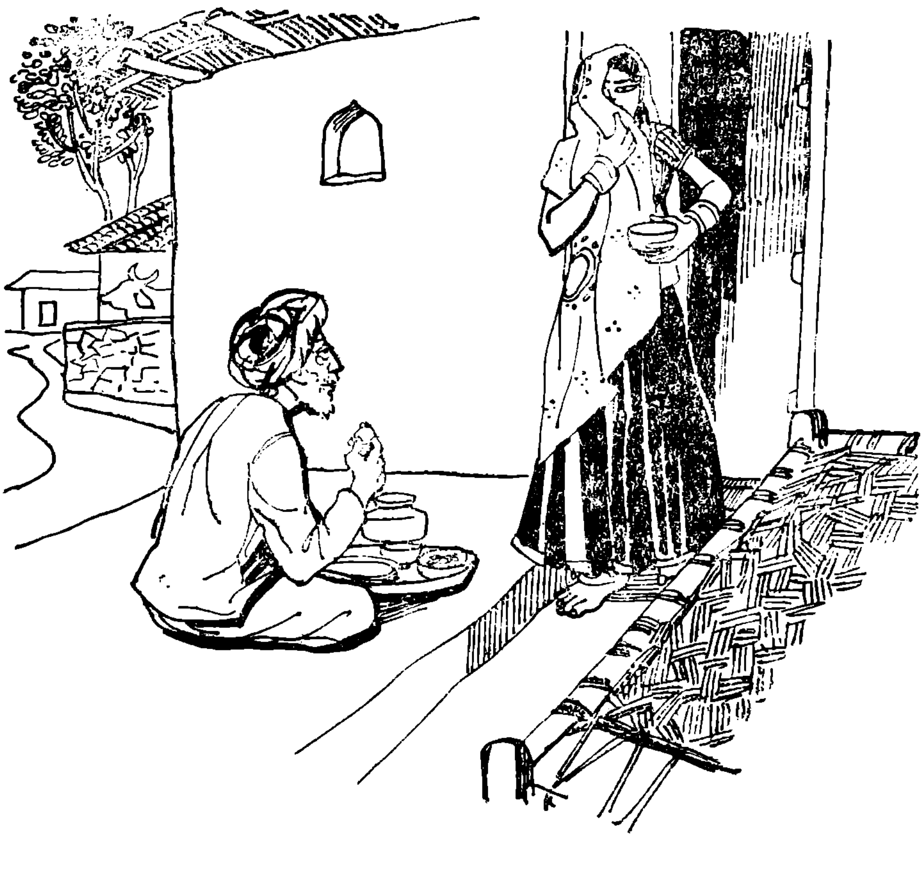
पात्र–परिचय

१.	किसना	– ग्रामीण युवक, आयु ३२ वर्ष ।
२.	लच्छी	– किसना की पत्नी, आयु ३० वर्ष ।
३.	जोधा	– किसना का नाना, आयु ७० वर्ष ।
४.	खैराती मियाँ	– मुसलमान युवक, आयु ३६ वर्ष, किसना का मित्र ।
५.	सलमा	– खैराती की पत्नी, आयु ३२ वर्ष ।
६.	हीरा जाट	– जाट युवक, आयु ३० वर्ष ।
७.	हीरा की पत्नी	– आयु २८ वर्ष ।
८.	माधो	– आयु ४० वर्ष, जोधा का भतीजा ।
९.	हरिया	– आयु ३५ वर्ष, जोधा का भतीजा ।
१०.	गुमाना	– आयु ३० वर्ष, जोधा का भतीजा ।
११.	मोना	– आयु २७ वर्ष, जोधा का भतीजा ।

(इनके अतिरिक्त आठ-दस व्यक्ति और ।)

वेशभूषा–ग्रामीण　　　　　　　　काल–बीसवीं सदी (उत्तरार्द्ध)

(गाँव के एक किसान के घर का दरवाजा दिखाई दे रहा है। उसके आगे चबूतरा है जिस पर दरवाजे के दायीं ओर एक चारपाई बिछी है। चारपाई के निकट ही बैठा जोधा एक बड़ी-सी थाली में खाना खा रहा है। लच्छी घूँघट की आड़ किये एक कटोरे में खीर लाती है और जोधा की थाली में रख देती है।)



जोधा : (कटोरी में गौर से देखते हुए प्रसन्न स्वर में) अच्छा ! आज भी खीर बनाई है ?

(सिर उठाकर लच्छी की ओर देखता है, लच्छो सिर हिला कर हामी भरती है, फिर जाने लगती है ।

जोधा : (खीर की घूँट खींच कर) बेटी !

(लच्छी मुड़कर घूँघट की आड़ करके खड़ी रह जाती है ।)

जोधा : बहू ! मेरा रोम-रोम तुम्हें आशीष देता है । तुम जरूर भले घर की बेटी हो, वरना इस कलजुग में कौन इतनी सेवा करता है !

(लच्छी निचले ओठ का एक कोना दबा कर मुस्कराती है, फिर चली जाती है ।)

जोधा : (कटोरे की खीर पीकर तृप्ति की सांस लेने के पश्चात् पुकारते हुए) किसना !

किसना : (घर के अन्दर से ही) क्या लाऊँ नानाजी ?

जोधा : (डकार लेते हुए) कुछ नहीं बेटा, बस पानी का लौटा ले आ ।

किसना : (जल का लोटा लाते हुए) कुछ और ले लेते ?

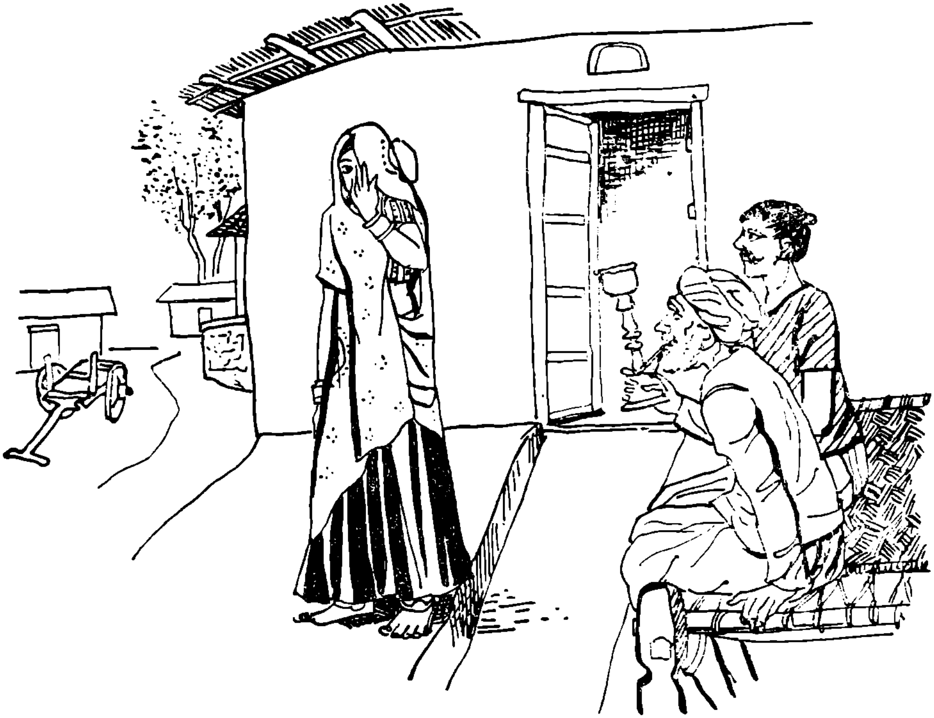
जोधा : नहीं रे बेटा, कोई पेट से बैर थोड़े ही है ?

(किसना जोधा के हाथ-मुँह धुलाता है । फिर जोधा हाथ से मूँछों का पानी निचोड़ते हुए उठ कर खाट पर बैठ जाता है । एक डकार फिर लेता है । किसना घर में जाता है और हुक्का ले आता है ।)

जोधा : (प्रसन्नता से हुक्का लेते हुए) किसना ! तू अपने शरीर पर भी ध्यान दे बेटा ! मेरी सेवा में ही क्यों दुबला हुआ जा रहा है ?

किसना : आपके अलावा मैं किसकी सेवा करूँ नानाजी ? आपने ही मुझे पाल-पोस कर बड़ा किया, शादी-ब्याह किया। (निःश्वास छोड़कर) आपके अलावा मेरा है भी कौन ?

जोधा : (किसना की पीठ पर हाथ फिराते हुए) वह तो ठीक है बेटा ! पर रोज-रोज खीर, पूड़ी, हलवा मेरे लिए ही क्यों बनवाता है ?



(अपने शरीर की ओर इशारा कर) अरे, इस बूढ़ी खाल का क्या अब चरस बनेगा ? तुम लोग खाओगे तो कमाओगे।

(लच्छी घर में से निकलती है। इशारे से किसना को एक ओर बुलाती है। अपने बाएं हाथ की तर्जनी और मध्यमा के बीच घूँघट को एक ओर से खींच रखा है।)

लच्छी : (धीमे स्वर में) तुम कहते क्यों नहीं ? (रहस्यमय स्वर में) यही अवसर है !

किसना : (उलझन में) पर कहूँ कैसे ? नानाजी सोचेंगे मैं कितना स्वार्थी हूँ ?

लच्छी : (दाँत भींचकर) अरे ऽ ऽ वे कुछ नहीं सोचेंगे। महीनों हो गये उन्हें माल बना-बना कर खिलाते हुए !

जोधा : (उनकी ओर कान देते हुए) किसना ! वह क्या कह रही है ?

किसना : (जोधा के निकट आकर खुशामदी स्वर में) जी···जी कहती तो वह ठीक ही है किन्तु मुझे डर लगता है, कहीं आप उस बात को उल्टी न समझ लें ?

जोधा : (सस्नेह) उल्टी ?···उल्टी क्यों समझूँगा भला ? वह बहुत सयानी है, वह उल्टी-सीधी बात कभी नहीं कह सकती···और फिर मुझे ? राम-राम ! तुम तो निस्संकोच होकर कहो, बात क्या है ?

किसना : (हथेली खुजाते हुए) वह कहती है···(लच्छी की ओर देखता है, लच्छी उसे घूर रही है)···कहती है कि···कि आपके पास कुल चार बीघा जमीन है, जिससे अपना काम चलता नहीं है। दो-पाँच रुपल्ली के लिए दूसरे किसानों के यहाँ मजदूरी करनी पड़ती है (वह फिर लच्छी की ओर देखता है, लच्छी पूर्ववत् खड़ी उसे घूर रही है)···नानाजी···बुरा मत मानना, कभी भी आपके सौ बरस पूरे हो सकते हैं। पके पान का कोई भरोसा है ? जाने कब पेड़ से

झर जाये ! आपके सरग सिधारे बाद सौ झंझट उठ खड़े होंगे और मुझे इस चार बीघा से भी हाथ धोना पड़ेगा । लोग कहेंगे–तेरा यहाँ क्या है ?

जोधा : (मुस्कराते हुए) तू जमीन का पट्टा ही अपने नाम चाहता है न ?
(लच्छी मुस्कराती है ।)

किसना : (खुश हो कर) जी-जी हाँ !

जोधा : (लच्छी से) बहू ! तू भी यहाँ आ जा । मेरी बात सुन ले ।
(लच्छी किसना की बगल में आकर उकड़ू बैठ जाती है । वह पूर्व-वत् किसना तथा जोधा से घूँघट की आड़ किये है ।)

जोधा : (दोनों की ओर बारी-बारी से देखकर) बेटी ! जमीन तो मुझे आगे-पीछे किसना के ही नाम करनी थी । यह ठहरा मेरा दोहता । भाईयों के लड़के हैं, पर आजकल भाई-बन्धु किसके सगे होते हैं ? बस एक ही खटका था कि बहू कैसी आयेगी, जाने रोटी देगी कि नहीं देगी ? सो बेटी तुझे देखकर जी भर गया । अब जमीन को क्या मैं मूँड में फोडूंगा ? दो जून रोटी चाहिए, बस ।

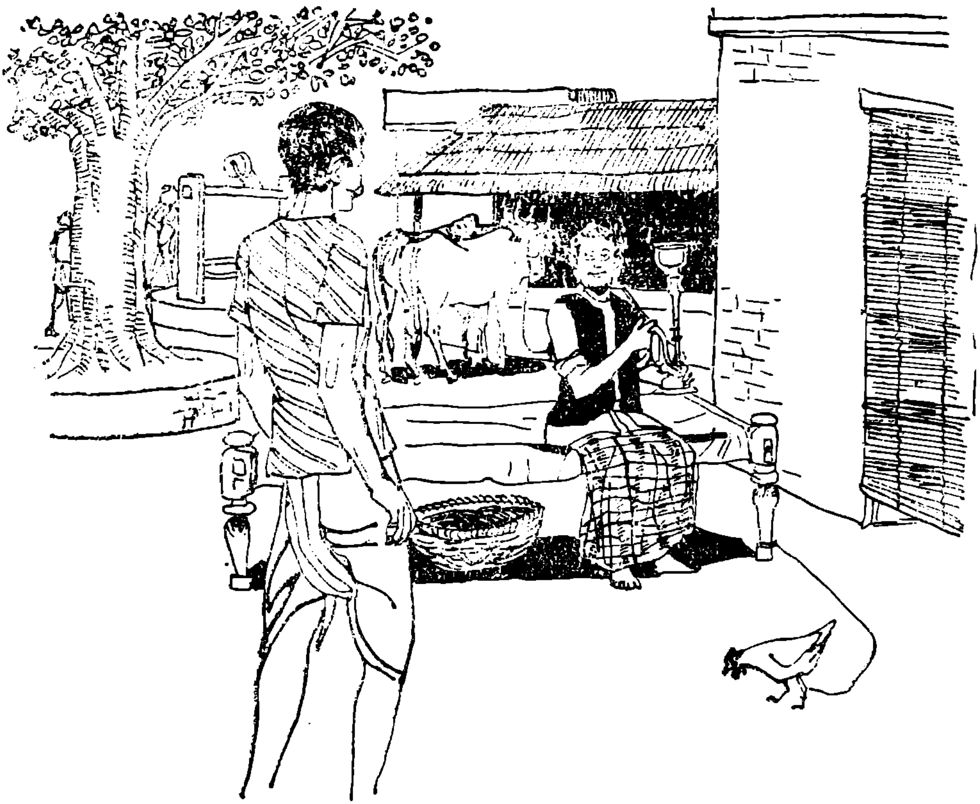
किसना : तो मैं पटवारी जी से कागज-पत्तर तैयार करवा लूँ ?

जोधा : हाँ कल ही करवा ले । कल अच्छा वार है मंगलवार ।

किसना : तब तो मुझे अभी पटवारी जी के पास जाना चाहिए, कहीं वे इधर-उधर हो जाये ?

जोधा : हाँ, जा ।
(किसना तेजी से चला जाता है । लच्छी मुस्कराती है ।)

(खैराती मियाँ का घर। दरवाजे के बाहर चारपाई बिछी है जिस पर बैठा खैराती हुक्का गुड़गुड़ा रहा है। खाट के पाये से एक मुर्गी बंधी है जो इधर-उधर घूम-फिर रही है। किसना आता है।)



किसना : (आवाज लगाते हुए) खैराती भाई !

खैराती मियाँ : चले आओ ।

(खैराती एक ओर सरक कर जगह देता है । किसना भी चारपाई पर बैठ जाता है ।

खैराती मियाँ : (हुक्का गुड़गुड़ाते हुए) बीड़ी मंगाऊँ ?

किसना : कहाँ से मंगाओगे ?

खैराती मियाँ : कहाँ से क्यों ? दो-चार बीड़ी तो घर में रखता ही हूँ, आये-गये के लिए ।

किसना : यों तो हमारी जेब में भी दो-चार बीड़ी पड़ी ही रहती है । नानाजी के सामने हुक्का तो पीता नहीं । पर तुम्हारे घर आकर भी हमारी बीड़ी क्यों पीयें ?

खैराती मियाँ : बिलकुल ठीक है । (पत्नी को आवाज लगाते हुए) सुनो ! जरा एक बीड़ी लाना ।

सलमा : (अन्दर से बीड़ी लेकर आते हुए) कौन आया है ?

खैराती मियाँ : (व्यंग्य से) तुम्हारा भाई नहीं आया है !

(किसना हँस पड़ता है ।)

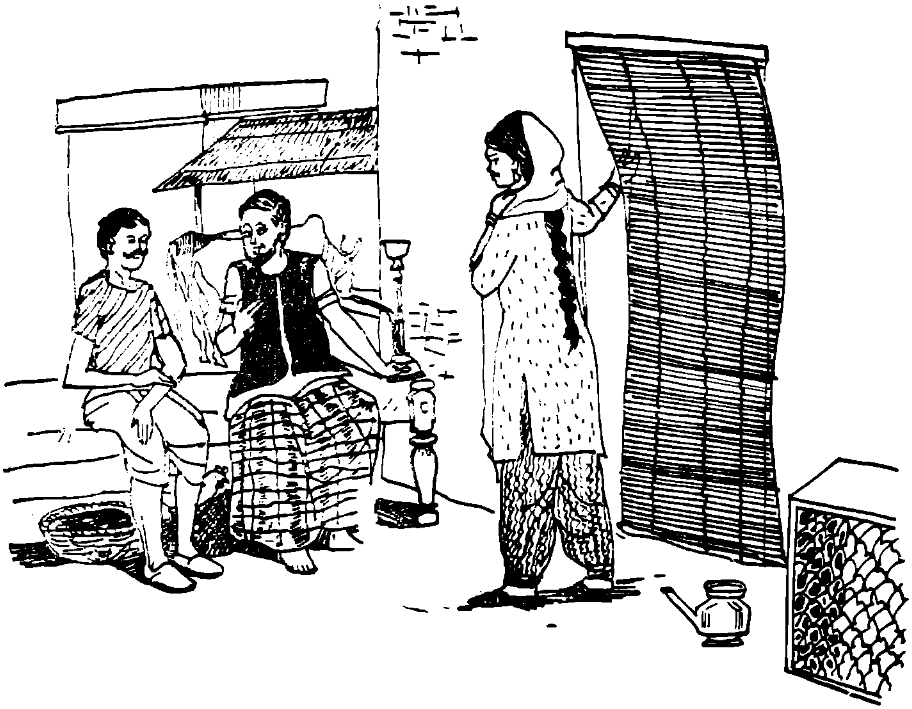
खैराती मियाँ : (किसना से) हाँ यार ! जब देखो तब—मेरा भाई आया है क्या—कौवा बोल रहा है; आज तो मेरा भाई आयेगा—सुनते-सुनते मेरे तो कान पक गये ।

सलमा : (किसना को बीड़ी देते हुए हँस कर) ये क्या मेरे भाई नहीं हैं ?

खैराती मियाँ : नहीं, बिलकुल नहीं । यह मेरा भाई है, तुम्हारा देवर !

(किसना खैराती के हुक्के पर से चिलम उतार कर अपनी बीड़ी सुलगाता है ।

सलमा : देवर क्या भाई नहीं होता ? लछमन सीता माता के देवर थे तो क्या उनके छोटे भाई जैसे नहीं थे ?



खैराती मियाँ : (कुछ गुस्सा होकर) मैं राम-लछमन की नहीं, किसना-खैराती की बात कर रहा हूँ । किसना मेरा मित्र है और तुम्हारा देवर । लेकिन अगर यह तुम्हारा भाई है तो मैं 'साला' कहूँगा।

किसना : (बीड़ी का कश लेकर, बनावटी क्रोध से) ए! सुबह-सुबह राजा कर्ण के बकत (वक्त) गाली देने की जरूरत नहीं है !
(खैराती और सलमा ठठा कर हँस पड़ते हैं। उनके साथ किसना भी हँसता है।)

किसना : (गंभीर होकर) मैं तो आज एक काम से आया था।

खैराती मियाँ : बोल न यार ! तेरे लिए तो जान हाजिर है !

किसना : दो दिन के लिए तेरा छकड़ा चाहिए। कड़बी लानी है।

खैराती मियाँ : अरे तो इसमें पूछने की क्या बात थी ? खलिहान में पड़ा है, ले जा।

किसना : पूछने की बात यह है कि तेरा नागौरी बैल भी देना पड़ेगा। मेरा रातिया इस साल हिम्मत हार गया। उमर भी तो हो गई है बेचारे की।

खैराती मियाँ : जब तू मुझे किसी चीज के लिए इनकार नहीं करता तो मैं कैसे करूँ ? लेकिन एक बात का ध्यान रखना। नागौरी के मैंने आज तक आर नहीं लगाई है। उसके आर मत लगाना। बस जरा-सा सोंटा ऊपर कर डरा देना काफी होगा।

किसना : अरे तूने मुझे समझ क्या रखा है ! उस सोने के कलंक लगाऊँगा ? आर से तो बैल की आदत भी बिगड़ती है। (उठते हुए) ठीक है, अब चलता हूँ। सवेरे-सवेरे दो चार आ गये तो आ ही गये।
(किसना उठकर जाने लगता।)

सलमा : सुनो, किसना जी ! बैल को बीच गाँव से मत ले जाईयो ! कुछ लोगों की नजर बहुत खराब है । टकार लग गई तो बेचारा जानवर पानी भी नहीं मांगेगा । यह तो आप हैं जिनको हम इनकार नहीं कर सकते, वरना इस गाँव में तो कोई मेरे बैल के हाथ तो लगा ले ।

किसना : (जाते हुए) चिन्ता मत करो भाभी !

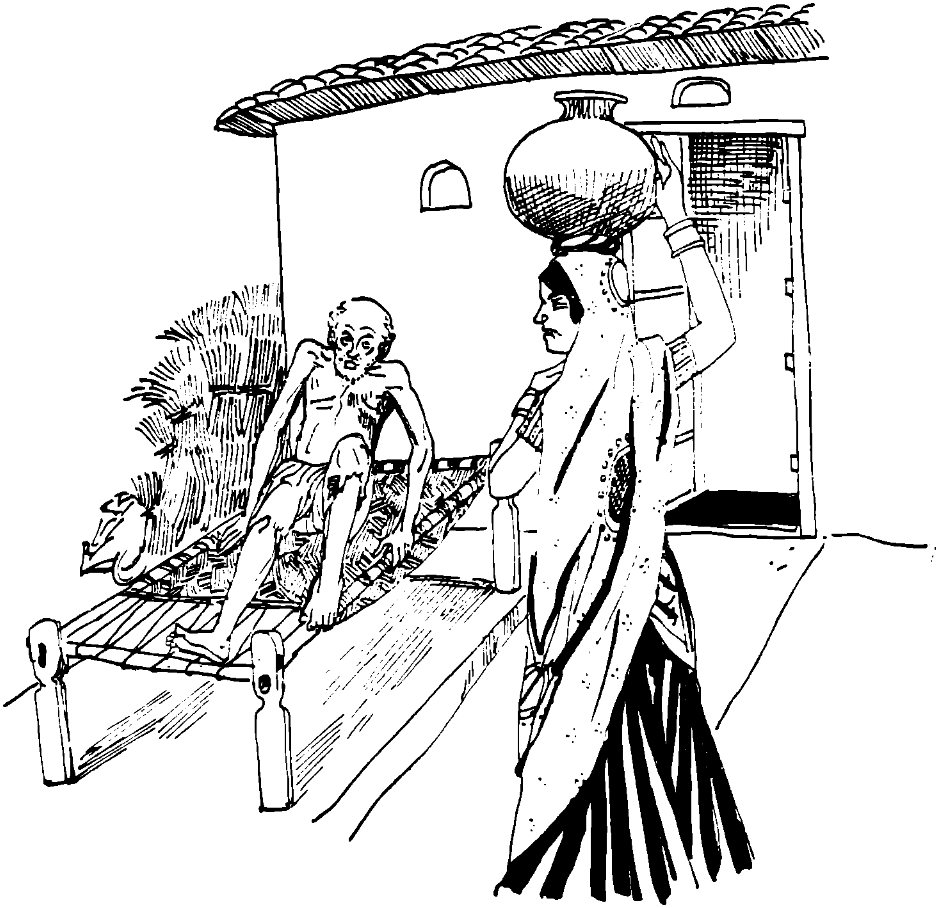
दृश्य-३

(किसना का घर । घर के आगे चबूतरे पर बिछी खाट पर जोधा लेटा है । वह कमर में फटी-सी धोती लपेटे है, बदन नंगा है । लच्छी पानी का घड़ा सिर पर रखे आती है और घर में घुस जाती है । उसे देखकर जोधा चारपाई पर उठ कर बैठ जाता है ।)

जोधा : (जरा ऊँची आवाज में) बहू ! आज तो बहुत देर कर दी । भूख के मारे मेरा पेट पाताल में जा रहा है । तेरे सब छोरे-छोरियों ने कलेवा कर लिया है, एकाध रोटी और छाछ बची हो तो जल्दी से दे दे ।

लच्छी : (घर से निकलकर घूँघट की आड़ किये हुए, कुपित होकर) रोटी कहाँ धरी है जो दे दूँ ? बनाऊँगी तभी तो दूँगी···आप तो छोरे-छोरियों से भी बुरे हो गये हैं दादाजी! आते ही 'हाय रोटी-हाय रोटी' की रट लगा दी । अड़ोसी-पड़ौसी सुनेंगे तो कहेंगे—बेचारे को रोटी नहीं देती । मैं पूछती हूँ, खाट में पड़े-पड़े भी आपके पेट में कुआँ कैसे खुद जाता है ? इस उमर में इतनी भूख अच्छी थोड़े ही है ।

(जोधा पहले नीचे गर्दन किये सुनता रहता है पर अन्तिम वाक्य उसे तीर की तरह लगते हैं और वह तिलमिला उठता है।)



जोधा : (जोर से) बहू ! जबान को लगाम दो । तुमने तो बेशरमी की हद कर दी ! कहाँ तो मुझे तुम्हारा स्वर भी सुनाई नहीं देता था

और कहाँ तुम इतनी आगे बढ़ गयी ! रोटी माँगता हूँ तो कोई मुफत में नहीं मांगता···खैर तुझ कल की छोकरी से क्या बात करूँ, आने दे तेरे खसम को !

लच्छी : (उसी क्रोध से) हाँ-हाँ, आ जाने दो। मैंने कोई गैरहक की बात नहीं कही। सच्ची बात में मैं किसी से डरने वाली···।

जोधा : (चीख कर) खबरदार, जो आगे से बड़े-बूढ़ों के सामने जबान चलायी ! जा–अपना काम कर ! (लच्छी भुनभुनाती हुई घर में चली जाती है, किसना आता है।)

किसना : (आते हुए) क्या बात है नानाजी ? क्यों सारे पाड़े को सिर पर उठा रक्खा है ?

जोधा : (गंभीर स्वर) किसना ! आ–यहाँ बैठ।

(किसना खाट पर बैठ जाता है।)

जोधा : देख किसना ! अहसान तो इस जमाने में कौन किसका मानता है, उस बात को छोड़। लेकिन मैं तुझ से पूछता हूँ–मैंने अपने भाई-बन्धुओं के लड़कों को जमीन नहीं दी और तुझे दी। क्यों दी ? इसलिए कि यह मेरा दोहता है, यही खाये तो अच्छा है वरना जमीन जायदाद के बदले रोटी देने वाले और सेवा करने वाले तो बहुत थे।

किसना : आखिर हुआ क्या ?

जोधा : तेरी बहू रोटी नहीं देती। माँगता हूँ तो जली-कटी सुनाती है। दोपहर हो गयी। लोग-बाग दोपहरी की रोटी खाने खेतों से लौट

आये हैं पर…(भरे गले से)…पर मुझे अभी कलेवा भी नहीं मिला। (स्वर संयत कर) कपड़े-लत्तों की हालत यह है कि पाँच साल पहले जाड़े में तूने वह एक गाढ़ी अंगरखी सिलवा कर दी थी। अभी जाड़ा तो नहीं है पर तन पर कुछ तो पतला-मोटा चाहिए न ? धोती भी तार-तार हो गई है।

किसना : नानाजी ! आप तो जानते हैं खेती में क्या बचता है ? मैं भी तो अपने लिए ढंग के कपड़े नहीं बनवा पाता। रहा रोटी का सवाल, तो उसके लिए आपको कभी मनाही नहीं। देर सबेर तो हो ही जाती है। वह तीन बच्चों की माँ है। बच्चों को सम्भालती है, खेत-क्यार संभालती है और हमको रोटी-टूक भी करके देती है।

जोधा : (जरा तैश में) अरे रोटी में देर हो जाती है तो सवेरे छाछ-राब का कलेवा तो दे सकती है न ? किसना ! मैंने हाथों में तेरे गू-मूत झेले हैं, तू मुझे मत चरा !

किसना : (उसी तैश में) गू-मूत झेले है तो अपने स्वार्थ के लिए ! आपके अगर कोई संतान होती तो आप मुझे नहीं पालते-पोसते !…बार-बार आप जमीन-जायदाद से दबाते हैं, लेकिन अगर हिसाब लगाया जाये तो इस जमीन की दुगुनी कीमत तो मैं आपको खिला चुका हूँ !

जोधा : (आश्चर्य और दुःख से) तो क्या अब तू मुझे रोटी नहीं देगा ?

किसना : नहीं, मैं यह बात नहीं कहता। लेकिन पाँच बाल-बच्चों के घर में मिलेगी, जैसे ही मिलेगी। आप कह दो कि आपके लिए तुरन्त रोटी सिक जाये या छाछ-राब आपको मिल जाये और बच्चे भूखे रह जायें ती यह नहीं हो सकता !

जोधा : (दर्दन हिलाते हुए) हूँ ऽ ऽ ! समझ गया–सब समझ गया ! मारेगा और रोने नहीं देगा ?

किसना : (दृढ़ स्वर में) अब इसे कुछ भी समझ लो। मैं तो सीधी बात कहता हूँ, आप ही इसे उल्टी समझते हो।

जोधा : (गंभीरता से) किसना !

किसना : क्या है ?

जोधा : तेरे मेरे नहीं पटेगी। यों तो भूखों मर जाऊँगा···तू मुझे माहवार खर्चा दे दिया कर। मैं रोटी किसी और से सिकवा लूंगा। कम से कम टेम (टाइम) पर मिल तो जाया करेगी।

किसना : नानाजी, तुम्हारे खेतों में इतना पैदा नहीं होता कि तुम्हारा महीना बांध दूं। वह तो मैं मेहनत मजदूरी करके किसी तरह काम चलाये जा रहा हूँ वरना खेत तो बंजर हैं।

जोधा : (गुस्सा होकर) जब मैं हल जोतता था तब तो बंजर थे नहीं, अब हो गये होंगे, और बंजर हैं तो जिंदगी–भर रोटी देने का करार क्यों किया था ?

(किसना कुछ नहीं बोलता। लच्छो तेजी से घर में से निकलती है। घूँघट पूर्ववत्।)

लच्छो : (गुस्से में) हमको मालूम नहीं था, तुम बैठे ही रहोगे, मरोगे ही नहीं !

जोधा : (लच्छो को तर्जनी दिखाते हुए) मैंने दस बार बरज दिया–बहू की

जात का मर्दों में बोलना ठीक नहीं। (किसना के हाथ लगाकर) अभी तो यह तेरा खसम बैठा है बोलने के लिए।

(लच्छी भुनभुनाती हुई फिर घर में चली जाती है।)

जोधा : (किसना से) किसना ! मैं पंचायत बैठाऊँगा !

किसना : बैठा लो। रोज-रोज का क्लेश मुझ से भी भोगा नहीं जाता।

दृश्य-४

(पाँच व्यक्ति बैठे बारी-बारी से हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं। उन्हीं में एक खैराती भी है, वह अपनी बीड़ी अलग पी रहा है। जोधा लाठी टेकता हुआ आता है।)

जोधा : (सब लोगों को गौर से देख कर पहचानने की कोशिश करते हुए) कौन खैराती ?

खैराती मियाँ : हाँ बाबा, मैं ही हूँ।

जोधा : और कौन-कौन बैठे हैं ?

(सबके चेहरे गौर से देख रहा है।)

मोना : मैं मोना हूँ ताऊ—और यह माधो भैया। फिर गुमाना भैया, हरिया भैया—सब घर ही घर के है, बोलो ?

जोधा : (अनमने ढँग से) घर के हो या बाहर के, मेरे लिए सब बराबर हैं। परसों बारह गाँवों की पंचायत है। तुम सब लोग आना, हो-बेटे ?

माधो : आ जायेंगे, आने में क्या है; पर कुछ बात तो बताओ ।



जोधा : (रुखाई से) क्यों छल रहे हो ? तुम्हें मालूम नहीं है ?

(सब एक दूसरे के ठोंगा देकर हँसते हैं ।)

हरिया : ताऊजी ! आज हमारी बात याद आ रही होगी ? पर उस

समय तो तुम्हें किसना के अलावा कोई सूझता ही नहीं था। माँ-जाये भाईयों को छोड़ा और दोहता को अपनाया। पर दोहते भी कभी किसी को निहाल करते हैं ?

जोधा : (उसी रुखाई से) छोड़ो बेटा, इस बात को। न कोई भाई निहाल करता, न कोई दोहता ! सब कहने की बाते हैं।

गुमाना : पर ताऊ ! आपको भी इस बुढ़ापे में पंचायत की क्या सूझी ? रूखी-सूखी मिलती है वैसी खाकर 'राम-राम' तो किया नहीं और···।

हरिया : (गुमाना का समर्थन करते हुए) हाँ, मुख में दाँत न पेट में आँत ! पर माया-मोह देखो ! दो दिन के जीने के लिए···।

जोधा : (कुपित होकर) अब तुम जले पर नमक मत छिड़को ! जिस पर बीतती है, वही जानता है···खैराती बेटा ! तुम जरा इधर आना ! (जोधा एक ओर जाकर खड़ा हो जाता है । खैराती उठ कर जोधा के पास जाता है। अन्य युवक पूर्ववत् बातें करते रहते है, हँसी-ठट्ठा करते हैं पर सुनाई नहीं देता।)

खैराती मियाँ : क्या बात है बाबा ?

जोधा : (खैराती के कंधे पर हाथ रखकर) बेटा ! परसो पंचायत में तुम जरूर आना।

खैराती मियाँ: (अनमनस्क-सा) आ जाऊँगा, पर आने से ही क्या होगा ?

जोधा : क्यों ? बोलोगे नहीं ?

खैराती मियाँ: अब मुझ से क्यों कहलवाते हो ? किसना से मेरी बीस साल की

दोस्ती है । फिर मेरी जरूरत भी क्या है ? सैंकड़ों व्यक्ति तो होंगे ?

जोधा : दोस्ती के लिए न्याय की बात नहीं कहोगे बेटा ? (निःश्वास छोड़कर)···खैर तुम आना तो सही ? (खैराती कुछ नहीं कहता ।)

दृश्य-२

(जाजम बिछी है । पन्द्रह-बीस आदमी बैठे हैं । किसना और खैराती दोनों पीछे की ओर बैठे बातें कर रहे हैं किन्तु उनकी



बातें सुनाई नहीं देती । कभी-कभी उनकी हँसी भी दिखाई दे जाती है । एक ओर कोने में आग सुलग रही है । जोधा बाबा

पीछे की ओर किसना से दूर पंचायत से कुछ अलग-सा बैठा है। पास ही उसकी लकड़ी रक्खी है। पंचों में हुक्का चल रहा है। दो तीन आदमी बीड़ी पी रहे हैं। दो-एक आदमी अपनी बारी आने पर हुक्के पर से चिलम उतार लेते हैं और दोनों हाथों में चिलम को विशेष प्रकार से पकड़ कर 'फूँक' खींच लेते है। ये लोग अपनी निम्न या उच्च जात के कारण दूसरों के जूठे हुक्के के नेजे को मुँह लगाना नहीं चाहते। पंचों के बीच में एक बड़ा-सा थाल भी है जिसमें बीड़ी, सिगरेट, सुपारी, सौंफ, इलायची आदि रक्खे हैं।)

किसना : (खड़ा होकर कुछ दूर बैठे एक अधेड़ व्यक्ति को पास आने का इशारा करता है। फिर उसे अलग ले जाकर समझाता है) नाई बाबा ! पंचों की खातिर-तवज्जों में कमी नहीं रहनी चाहिए ! हुक्के वाले को हुक्का, बीड़ो-सिगरेट वाले को बीड़ी-सिगरेट। जल के लिए पनिहारे को कह देना···ठीक है ?

नाई : (सिर हिला कर हाथ जोड़ते हुए) जी–जजमान बिलकुल ठीक है।

(नाई अपने पूर्व स्थान पर जा बैठता है। फिर किसना खैराती को अपने पास बुलाता है। खैराती थाल में से बीड़ी ले, उसे आग से सुलगा कर पीता हुआ किसना के पास आ खड़ा होता है।)

किसना : (धीमी आवाज में) खैराती भाई ! डोकरे की करामात देख रहे हो ?

खैराती मियाँ : क्या ?

किसना : (झुंझला कर) फिर तुमने पंचायत में आकर देखा क्या ?

खैराती मियाँ : (समझ कर, पंचों पर नजर डालते हुए) हाँ, पंचायत में तो देख रहा हूँ, सब तेरे दुश्मन ही दिखाई दे रहे हैं।

किसना : अब इससे बढ़ कर क्या करामात होगी ?

खैराती मियाँ : लेकिन तू चिंता मत कर। बुढ़ऊ के पास क्या परमाण है कि तू उन्हें दुःख देता है। अगर फैसला विरुद्ध गया तो कह देना—हमें इन पंचों पर विश्वास नहीं, पंचायत दोबारा होगी। कोर्ट-कचहरी तो बाबा करने से रहा।

किसना : अरे, राम-राम कहो। कोर्ट-कचहरी के लिए पैसा चाहिए पैसा।

(दो व्यक्ति आते हैं। पंचों से उनकी दबे स्वर में 'राम-राम' और नमस्कार होती है। फिर वे पंचों में बैठ जाते हैं।)

जोधा : (खड़ा हो, हाथ जोड़ कर) सब पंच लोग आ चुके हैं। आप सब अपने-अपने जरूरी काम छोड़ कर आये हैं, यह मुझ बुड्ढे, लाचार व्यक्ति पर आप लोगों ने बहुत बड़ा अहसान किया है। अब…समय बहुत हो गया है, पंच लोगों से मेरी अरदास है कि पंचायत शुरू करें।

(जोधा पूर्ववत् हाथ जोड़े खड़ा रहता है।)

एक व्यक्ति : हाँ भाई पंचों ! शुरू करो।

दूसरा व्यक्ति : पहले मुख्य पंच तो आगे आकर बैठें। तभी तो कार्यवाही शुरू होगी ?

तीसरा व्यक्ति : ठीक बात है। जोधा बाबा ! मुख्य पंच किसे बद रहे हो ?

जोधा : किसना जिसे चाहे बद ले, मुझे एतराज नहीं।

किसना : (बैठे-बैठे ही, श्लेष में) नाना जी, सब काम आपने अपनी इच्छानुसार ही किया है। मुख्य पंच भी आप ही चुन लो। मुझे कोई वज्र नहीं।

जोधा : अपनी इच्छा से कोई नहीं करता बेटे ! मजबूरी ही सब कुछ कराती है। खैर, अगर तुम अपनी बात को सही समझते हो तो अब मुख्य पंच तुम बद लो।

किसना : (क्रोध को दबाने का प्रयत्न) अब भरी पंचायत में मेरा मुँह मत खुलवाओ नानाजी ! मुख्य पंच भी आप ही चुन लो।

जोधा : (गहरा सांस लेकर) ठीक है, यदि ऐसी ही बात है तो मैं मुख्य पंच खैराती मियाँ को चुनता हूँ।

(पंचायत में काना फूसी और धीमा शोरगुल सुनाई देता है। जोधा अपने स्थान पर बैठ जाता है।)

किसना : (खुशी दबाने का प्रयत्न) मेरे लिए तो जैसा हरिया, वैसा खैराती। क्यों भाई पंचों ?

एक-दो व्यक्ति : वाजिब बात है।

एक व्यक्ति : खैराती भाई, आगे आओ। अब पीछे बैठने से काम नहीं चलेगा।

खैराती मियाँ : नहीं-नहीं। मैं···मैं···पंचायत में बड़े-बड़े पंच बैठे हैं, उनके सामने मुझ-सा मामूली व्यक्ति······।

किसना : (दृढ़ स्वर में) देखो भाई खैराती! मेरी तरफ से मुख्य पंच कोई भी हो, किन्तु जब नानाजी ने तुम्हें मुकर्रर किया है तो तुम्हें ही आना पड़ेगा।

(पंचायत में से दो व्यक्ति बाहें पकड़ कर आदर से खैराती को खींच लेते हैं और पंचों के बीच में बैठा देते हैं। नाई हुक्के का बासी पानी निकाल कर ताजा भरता है और चिलम भी दोबारा तैयार कर पंचों को थमा देता है। पंचों की कार्यवाही निरन्तर चलती रहती है।

माधो : (बैठे-बैठे ही) हाँ-जी; जोधा बाबा अब आप अपनी बात शुरू करें कि उन्होंने पंचायत क्यों बुलायी है?

जोधा : (खड़ा हो हाथ जोड़कर) पंचों! मैं निस्संतान हूँ। मैंने अपने नाती किसना को पालपोस कर बड़ा किया, इसकी शादी की। इसलिए कि यह बुढ़ापे में रोटी देगा। किसना ने पाँच साल पहले तक मेरी अच्छी सेवा की, कोई तकलीफ नहीं होने दी, बात को बात ही कहूँगा। इसके आग्रह पर मैंने अपनी जमीन-जायदाद भी इसके नाम कर दी और यह इकरारनामा लिखवा लिया कि किसना मुझे आजीवन रोटी देगा, हारी-बीमारी में दवा-दारू करायेगा। यदि ऐसा नहीं करे तो राज-कचहरी में, पचों में झूठा साबित होवे और जमीन जायदाद से अधिकार खो बैठे।

(जोधा बाबा कुछ सोचने लगता है।)

एक व्यक्ति : फिर क्या हुआ? आगे बढ़ो।

जोधा : किन्तु जमीन का पट्टा अपने नाम होने के बाद किसना की नजर बदल गई। पाँच साल से बर्दाश्त कर रहा हूँ पर अब बर्दाश्त नहीं होता। मुझे प्रायः एक जून ही रोटी मिलती है, वह भी सूखी-बासी। छाछ-पानी, साग-पात के तो दरसन ही दुर्लभ हो गये हैं। लत्तों-कपड़ों की हालत तो आप लोग देख ही रहे हैं। पाँच साल से किसना ने मुझे कोई कपड़ा नहीं दिया है।

पंचों ! कोर्ट-कचहरी साधने की न मेरे पास हिम्मत है न गाँठ में पैसा-टका। मेरे दिन गिनती के रह गये हैं। मैं तो ये दिन भूख-प्यास, सुख-दुःख सह कर किसी भी तरह काट लूंगा। किन्तु यह बात का सवाल है, न्याय-अन्याय का सवाल है। इसलिए आप लोगों को कष्ट दिया अब आप जानें और आपका काम जाने।

(जोधा बाबा बैठ जाता है। एकाध मिनट के लिए पंचायत में स्तब्धता छा जाती है फिर फुसफुसाहट और धीमा शोरगुल होने लगता है।)

खैराती मियाँ : (बैठे-बैठे ही ऊँची आवाज में) अब भाई किसना अपनी बात कहे।

किसना : (खड़ा हो, हाथ जोड़ कर) पंचों ! सुना है, पंचों के मुख से राम बोलता है। मैं आप लोगों से पूछना चाहता हूँ कि मैं एक रोटी की बचत के लिए नानाजी को भूखों मारूँगा ? यह बात आप पंचों का राम मानता है ? आप लोग जानते है, पाँच

बाल-बच्चों के घर में रोटी मिलने में थोड़ी देर-सबेर हो जाती है। रही कपड़ों-लत्तों की बात; तो कुल चार बीघा तो जमीन है, वह भी कोई खास उपजाऊ नहीं। उसमें मैं क्या-क्या करूँ ? सब ग्रामीण भाई जानते हैं, अपनी खेती के अलावा मुझे मजूरी भी करनी पड़ती है……अब इसमें मैंने कोई गैर-वाजिब बात कही हो तो आप पंचों की जूतियाँ और मेरा माथा !

(किसना बैठ जाता है। एकाध मिनट पंचों में विचार-विमर्श चलता है।)

खैराती मियाँ : (ऊँचे स्वर में) किसना ! तुमने दो बातें कही हैं। पहली यह कि जोधा बाबा ने झूठ कहा कि तुम उसे भूखा रखते हो। दूसरी यह कि तुम जो कुछ उसे देते हो, उससे कुछ भी अधिक नहीं दे सकते। क्यों है न यही बात ?

किसना : (स्वीकृति में सिर हिलाते हुए) हूँ।

खैराती मियाँ : (सख्त लहजे में) खड़े होकर पंचायत के तरीके से कहो, जिससे सब पंचों को मालूम पड़े।

किसना : (खड़ा होकर) हाँ, नानाजी ने छोटी-छोटी बातों को बढ़ा-चढ़ा कर बताया है, और मैं जो कुछ दे रहा हूँ उससे अधिक नहीं दे सकता।

खैराती मियाँ : जोधा बाबा ! किसना ने अपनी बात कही। अब आप बताओ, आप क्या चाहते हो ?

जोधा : (खड़ा होकर) मैं चाहता हूँ कि किसना मुझे माहवार खर्च दे। मैं मेरा अलग पका-खा लूँगा। मेरे खेतों से इतना लाभ तो मिलता ही है कि मुझे माहवार खर्च दिया जा सके।

किसना : (खड़ा होकर, कड़े स्वर में) इकरारनामे में रोटी-कपड़ा देने की बात है, अलग से माहवार खर्च देने की कोई बात उसमें नहीं है।

खैराती मियाँ : (कड़ा स्वर) तुम बैठ जाओ किसना! पंचों ने तुमसे यह नहीं पूछा है कि इकरारनामे में क्या लिखा है? इकरारनामा पंचों से बढ़ कर नहीं है।

(किसना बैठ जाता है। उसके चेहरे पर उलझन के भाव हैं। वह रह-रह कर खैराती की ओर देखता है। एकाध मिनट पंच लोग कानाफूसी करते हैं। फिर फैसला सुनाने के लिए खैराती मियाँ उठ खड़े होते हैं।)

खैराती मियाँ : किसना! हम दोनों बचपन के गहरे दोस्त हैं। हम सदा सुख-दुःख के साथी रहे हैं और खुदा करे, ताजिंदगी रहें।
(किसना खुशी से गर्दन हिलाता है)

किन्तु इस समय मैं तुम्हारा मित्र खैराती नहीं, मुख्य पंच हूँ। इस समय मेरी नजर में किसना और जोधा बाबा में कोई फरक नहीं है। यह मैं नहीं, मेरे मुख से बारह गाँवों के पंच बोल रहे हैं और पंचों के मुख से खुदा बोल रहा है।
(किसना के चेहरे का रंग बदल रहा है। खैराती एक गहरा श्वास लेकर फिर कहता है।)

पंचायत का यह फैसला है कि किसना, जोधा बाबा को एक मन अनाज और पचास रुपये नकद माहवार खर्च के रूप में देगा। नहीं तो जमीन-जायदाद का पट्टा जो उसके नाम है, रद्द समझा जावेगा।

(पंचों के मुख से 'वाह-वाह' निकलती है। किसना क्रोध और आश्चर्य से खैराती को देख रहा है।

एक व्यक्ति : वाह ! इसे कहते है न्याय ! दोस्ती, दोस्ती की जगह है।

दूसरा व्यक्ति : दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया !

तीसरा व्यक्ति : कौन कहता है गरीब को न्याय नहीं मिल सकता ?

(पंच लोग न्याय की प्रशंसा करते हुए चले जाते हैं। अन्त में खैराती मियाँ और किसना खड़े रह जाते हैं। किसना, खैराती को क्रोध और घृणा से घूर रहा है।)

खैराती मियाँ : (धीरे-धीरे किसना की ओर बढ़ते हुए) किसना ! मेरे दोस्त ! मैं......।

किसना : (बीच में ही घृणा से मुँह बिचकाते हुए) दोस्त......शरम नहीं आती दोस्त कहते हुए ? दोगला ! पल में कुछ, पल में कुछ.... गिरगिट !

हुम !

(किसना उसे घूरता हुआ तेजी से चला जाता है। खैराती विवशता से देखता रह जाता है।)

(हरिया, माधो, मोना और किसना एक जगह बैठे हुक्का पी रहे हैं, गपशप हो रही है।

हरिया : कुछ भी कहो भाई किसना, निकले तुम कायर ही।

किसना : कायर ! कायर क्यों ?

हरिया : अरे खैराती ने तुम्हें ऐन मौके पर धोखा दिया, तब तुमने क्या प्रतिज्ञा की थी ?

किसना : (गहरा श्वास लेकर) वह प्रतिज्ञा मैं भूला नहीं हूँ हरी मामा !

माधो : (दुष्टता पूर्वक मुस्कराते हुए) धीरे-धीरे भूल जाओगे।

मोना : (हँसकर) हाँ ऽ ऽ, जो गुस्सा उस समय था वह आज नहीं और जो आज है, वह कल नहीं रहेगा।

किसना : (आवेश में) खैराती से बदला लेना मैं सात जनम में भी नहीं भूलूँगा। बस मौके की तलाश में हूँ। साँप की ठोड़ी जब पत्थर पर आ जाए तभी उस पर पत्थर मारना चाहिए।

गुमाना : (तेजी से आते हुए) गजब हो गया ! भगवान ऐसा किसी के साथ नहीं करे।

माधो-किसना : क्या हुआ ?

(सब चौंक कर गुमाना की ओर देखते हैं।)

गुमाना : खैराती का नागौरी आज अचानक मर गया !

सब : (आश्चर्य से एक साथ) कैसे ?

गुमाना : सवेरे-सवेरे जब मियाँ रातिब लेकर बाड़े में पहुँचे तो बैल मरा पड़ा था। एक पैर में किसी जहरीले कीड़े के खाने का निशान है। सब घर वाले फूट-फूट कर रो रहे हैं, बेचारे !

हरिया : ओह ! बैरी के साथ भी भगवान ऐसा न करे।

किसना : (चीख कर) क्यों नहीं करे ? ऐसे दगाबाज के साथ तो ऐसा ही होना चाहिए। अच्छा किया भगवान ने······बहुत अच्छा किया। माधो मामा ! मैं नहीं कहता था कि मेरे पाँच बाल-बच्चों के पेट पर जिसने छुरी फेरी है, उस घोर पाप का फल उसे जरूर भोगना पड़ेगा ! आषाढ़ का दोंगड़ा होते ही मियाँजी को बैल खरीदना पड़ेगा। देखता हूँ दो हजार रुपये किसकी टेंट से निकलते हैं ? किसी ने ठीक ही कहा है, आदमी सब कुछ करे किन्तु किसी गरीब की 'हाय' न ले।

दृश्य-२

(प्रातःकाल का समय। किसना का घर। चबूतरे पर आकर सलमा गुस्से में लच्छी को पुकारती है लच्छी घर के अन्दर है।)

सलमा : (जोर से) लच्छी ! ओ लच्छी !

लच्छी : (घर से बाहर निकल कर उसी लहजे में) क्या है ? राजा कर्ण के बकत क्यों चिल्ला रही है ?

सलमा : (फुंकारते हुए) जिसका घर जलता है, वह अपने आप चिल्लाता है !

लच्छी : क्यों तेरे क्या हो गया ?

सलमा : (ऊँचे स्वर में) मेरे बाल-बच्चे कहाँ तो दूध-घी खाते थे और कहाँ चुल्लू भर छाछ को तरस गये हैं। बेचारे पानी के साथ रोटी निगलते हैं। मेरा तो कलेजा टूक-टूक हो जाता है, पर तेरा कलेजा तो अब ठण्डा हो गया न ? या कुछ और बाकी है ?

लच्छी : अरे लच्छमी ! तू सुबह-सुबह क्यों मेरे पीछे पड़ गयी ? मुझे तो यह भी मालूम नहीं कि तेरे बाल-बच्चों का घी-दूध कैसे छिन गया और उसमें हम से क्या खता हो गयी ?

सलमा : साफ-साफ कह दूं ?

लच्छी : (ऊँचे स्वर में) अरे कह दे ! डराती किसे है ? पानी में पग देगा, उसी का भींजेगा न ?

सलमा : (दाएँ हाथ की कनिष्ठा पर उसी हाथ का अँगूठा रख कर कुछ गिनाने की मुद्रा में) देख ! तेरे खसम ने मेरे आदमी को बेवजह गालियाँ दी और कहा कि तुझ से बदला लूंगा। फिर उसके तीसरे ही दिन मेरा बैल मार दिया ! झख मार कर हमको ढ़ाई हजार की भैंस दो हजार में बेचनी पड़ी। क्या करें, आषाढ़ माथे पर है नया बैल तो आयेगा ही। (फिर अचानक तैश में आकर तर्जनी दिखाते हुए) लेकिन देख ! किसी गरीब की आतमा सताना अच्छी बात नहीं, मैं कहे देती हूँ ! कहावत है—गरीब रो देगा तो जड़-मूल से खो देगा !

लच्छी : (हाथ नचा कर चीखते हुए) अरे वाह ! उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे ! तेरे खसम ने हमारे साथ किया, वह तो जग-जाहिर है ! हमने तो अभी कुछ भी नहीं किया। लेकिन वह ऊपर वाला तो नेकी-बदी सब देखता है न ? तुमने किया सो भोगा, प्रत्यच्छ में परमाण की क्या जरूरत ?

सलमा : (उसी प्रकार हाथ नचाते हुए, ऊँचे स्वर में) आय-हाय ! (नकल करते हुए) किया सो भोगा......यह क्यों नहीं कहती कि सब तेरी ही काली करतूत थी। या तो तूने मेरे बैल के कुछ करवा दिया है या सपेरे से मेरे बाड़े में साँप-गोहर छुड़वा दिया......(रूआँसी होकर) रांड डाकन खा गई मेरे बैल को !

लच्छी : (तर्जनी से इशारा कर आँखें दिखाते हुए, क्रोध से) रांड तू, तेरी माँ ! ढंग से बोल नहीं तो......
(किसना तेज-तेज कदम उठाता हुआ आता है।)

किसना : (पटाके के साथ हाथ जोड़ते हुए सलमा से, तेज स्वर में) अरे तुम जाओ बाबा। (फिर पत्नी को घर की ओर धकेलते हुए) चलो अन्दर ! तुम्हें हमेशा झगड़ा ही सूझता है।
(सलमा माथे पर थोड़ी-सी ओढ़नी खींच लेती है और बड़बड़ाती हुई चली जाती है।)

लच्छी : (घर में जाते हुए, पति से) तुम दुनियाँ से तो जीतते नहीं और झट मेरा कान ऐंठ लेते हो। वह राँड कह रही थी......
(दोनों घर में चले जाते हैं।)

(हीरा जाट का घर। दरवाजा दिखाई देता है। खैराती मियाँ आते हैं।)



खैराती मियाँ : (आवाज लगाते हुए) हीरा भाई......ओ हीरा भाई !

हीरा : (घर के अन्दर से) कौन है ?

खैराती मियाँ : बाहर तो आओ !

(हीरा बाहर आता है। खैराती को देख कर उसके माथे पर बल पड़ जाते हैं। खैराती जबरदस्ती मुस्कराता है।)

हीरा : (रूखे स्वर में) आओ। कैसे आना हुआ ?

खैराती मियाँ : पैसे लेने आया हूँ ! भाई-तुम से कौन-सी बात छिपी है ? मुझे बैल की सख्त जरूरत है, वरना भैंस किसी हालत में नहीं बेचता ।

हीरा : देखो भाई। तुम इस कान से सुनो, चाहे उस कान से; मेरे पास संतमेंत के पैसे नहीं है जो तुम्हें दे दूँ ।

खैराती मियाँ : क्यों, संतमेंत कैसे ?

हीरा : (तर्जनी दिखाते हुए) देख ! तेरी भैंस के यहाँ आने के पन्द्रह दिन बाद ही उसका पाड़ा मर गया । उसके बाद मैंने लाख कोशिश की किन्तु भैंस ने दूध नहीं दिया। अब मैं किस बात के पैसे दूँ ?

खैराती मियाँ : (क्रोध में) पाड़ा क्या, कल को भैंस भी मरेगी ! इसकी मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं, किन्तु तुम्हें पैसे देने पड़ेंगे ।

हीरा की पत्नी : (घर में से निकल कर, व्यंग पूर्वक) आ ऽऽ हा-हा-हा-! यह लाट साहब आया है, पैसे देने पड़ेंगे ! पैसे दूध के मिलते हैं। उस खालड़े (बिना दूध की भैंस) का हम क्या करें ?

खैराती मियाँ : (संयत रहने का प्रयत्न करते हुए) देख भाई हीरा ! जिस समय मैंने भैंस दी थी, पाड़ा बिलकुल स्वस्थ था। दूध भी मैंने तुम्हें निकाल कर बताया था। एक जून का सात किलो दूध तुमने ही अपने हाथ से तोला है, बल्कि मैंने तुम्हें यह भी कहा था कि पाड़े की सार-संभाल रखना। न उसको ज्यादा दूध पीने देना कि गंडाल पड़ जायें और न बहुत कम ही, कि पाड़ा भूख से

मर जाये; नहीं तो भैंस दूध नहीं देगी। अब तुम मेरे पैसे कैसे रोक सकते हो ?

हीरा : (कड़े स्वर में) ओ, मियाँ जी की दुम ! (तर्जनी से सामने रास्ता दिखाते हुए) यह दही-सा रास्ता पड़ा। सीधे चले जाओ। वरना मेरा नाम हीरा जाट है, समझे ? ऐसे पैसे दूंगा कि जिंदगी भर याद रक्खोगे !

खैराती मियाँ :(कुपित होकर) तो सीधी अंगुली घी नहीं निकलेगा ?

खैराती मियाँ :(हाथ नचाते हुए)हाँ-हाँ, नहीं निकलेगा ! अब तू टेढ़ी कर ले ! हम दूध का धंधा करते हैं कोई हँसी ठट्ठा नहीं, समझे ! भैंस से दूध निकलता ही नहीं तो पैसे कहाँ से आयेंगे ?

खैराती मियाँ : (गुस्से में) ठीक है। मैं पंचायत बैठाऊँगा। मेरे पैरों में तू पगड़ी नहीं पटकता फिरे तो मेरा नाम खैराती नहीं !

हीरा की पत्नी : (ऊँचे स्वर से) अरे बैठा ले ! पंचायत। डराता किसे है ? पंचायत बैठाना कोई मजाक है ? याद रख, अगर तेरी बोलने वाले दो हैं तो हमारी बोलने वाले सौ !

खैराती मियां : अरे, पंच क्या ईमान की बात नहीं कहेंगे ?

हीरा : (खैराती को धक्का मारते हुए) जा-जा ! बड़ा आया ईमान वाला। मैं तो सोचता हूँ, सुबह-सुबह क्यों झगड़ा मोल लूँ, वरना...।

(खैराती हीरा को घूरता हुआ चला जाता है।)

दृश्य-४

(पंचायत का पहले जैसा ही दृश्य। प्रायः वे ही व्यक्ति जो पहले पंचायत में थे, बैठे हैं।)



माधो : (बैठे-बैठे ही) पंचायत शुरू करो भाई ? अब यों बैठने से काम नहीं चलेगा ।

हरिया : बोलो खैराती भाई ? मुख्य पंच किसे बदते हो ?

खैराती : (खड़ा होकर हीरा जाट की ओर देखते हुए) हीरा भाई जिसे चाहे बद ले, मुझे एतराज नहीं ।

(माधो, हीरा के ठोंगा लगा कर इशारे से किसना को बताता है ।)

हीरा : (खड़ा होकर) मेरी तरफ़ से किसना भाई मुख्य पंच है ।

(खैराती हक्का-बक्का सा क्रमशः किसना और हीरा की ओर देखता है । लोगों में धीमा शोरगुल और कानाफूसी सुनाई देती है ।)

एक व्यक्ति : (बैठे-बैठे ही) खैराती मियाँ, तुम्हें कोई एतराज हो तो एक बार और सोच लो !

हरिया : (उस व्यक्ति की ओर क्रोध से) खैराती भाई कह चुका है कि उसको उज्र नहीं !

खैराती मियाँ : (उदास-सा) हां, मुझे कोई उज्र नहीं ।

(माधो आँख के इशारे से किसना को याद दिलाता है—आज उसका मौका है !)

एकव्यक्ति : आओ भाई किसना, आगे आओ ।

(किसना उठता है और काँपते हाथ पैरों से पंचों के बीच में जा बैठता है । उसके चेहरे पर घबराहट है ।)

माधो : (ऊँचे स्वर में) हाँ भाई हीरा ! अपनी बात कहो ।

हीरा : (खड़ा हो, हाथ जोड़ कर) पंचों ! मैंने खैराती भाई की भैंस दो हजार रुपये में मोल ली थी और एक महीने में रुपये देने का वायदा किया था । किन्तु मैंने शर्त्त रक्खी थी कि अगर भैंस ने नौ महीने ठीक तरह दूध दिया तो तुम्हारे दो हजार रुपये खरे हैं, किन्तु यदि भैंस बेकार निकल गयी तो रुपये वापिस निकलवा लूंगा ।

दो-एक व्यक्ति : वाजिब बात है, फिर क्या हुआ ?

हीरा : फिर पन्द्रह दिन बाद भैंस का पाड़ा मर गया और भैंस ने एक बार भी दूध नहीं दिया । (पुनः हाथ जोड़ कर) आप पंचों से मेरी विनती है—मैं गरीब आदमी हूँ ! दूध बेच कर अपने बाल-बच्चों का पेट पालता हूँ । आप लोग ही बतायें, मैं खैराती को पैसे कहाँ से दूँ ?

(हीरा बैठ जाता है ।)

किसना : अब खैराती मियाँ अपनी बात कहे ।

खैराती मियाँ : (खड़ा हो, हाथ जोड़ कर) पंचों ! यह सही है कि मैंने यह कहा था कि यदि भैंस बेकार निकल गई तो पैसे वापिस कर दूंगा । मैंने यह इसलिए कहा था, क्योंकि मुझे मेरी भैंस पर पूरा यकीन था और मुझे ही क्यों, स्वयं हीरा भाई भी इस भैंस को मेरे खूंटे पर तीन साल से देख रहा है । सारा गांव इसकी प्रशंसा करता नहीं अघाता भैंस बेकार निकली भी नहीं । किन्तु पन्द्रह दिन बाद उसका पाड़ा मर गया । यह बात मैंने हीरा भाई को बता दी थी कि पाड़े का सार-सम्भाल रखना, वरना भैंस दूध से चली जायेगी । यह भैंस बिना पाड़े के दूध नहींदेती अब आपपंच भाई ही न्याय करें, इसमें मेरा क्या कसूर है ? (खैराती मियाँ बैठ जाता है । पंच सलाह-मशविरा करते हैं । धीमा शोरगुल और कानाफूसी सुनाई देती है ।)

किसना : (बैठे-बैठे ही) हीरा भाई ! पंचायत का फैसला सुनाने से पहले तुम्हें एक सूचना देना चाहता हूँ । कल जब मैं कसबे से लौट रहा था तो चमनलाल हलवाई ने कहा—मैं हीरा को इस महीने के दूध के पैसे नहीं दूँगा ।

हीरा : (तमक कर उठते हुए) क्यों ?

किसना : उसने कहा कि इस महीने में कई बार तुम्हारा दूध फट गया है और इससे उसकी ग्राहकी बिगड़ गयी है ।

हीरा : (आवेश में) ग्राहकी बिगड़ गयी तो मेरे ठेंगे से ! दूध को सम्भाल के नहीं रखेगा तो फटेगा ही, गर्मी कितनी है ! बीच बाजार पैसे नहीं बरसाये तो मेरा नाम हीरा जाट नहीं !

(सभी पंच ठहका लगा कर हँस पड़ते हैं। हीरा एक बारगी हक्का-बक्का रह जाता है, फिर लज्जित होकर बैठ जाता है।)

किसना : (खड़ा होकर) पंचों ! इस गाँव के हम सब ग्रामीण भाई तो यह अच्छी तरह जानते हैं कि खैराती भाई की भैंस में कोई दोष नहीं था, यह अलग बात है कि बहुत-सी भैंसे पाड़ा-पाड़ी मर जाने के बाद दूध नहीं देती। इसके लिए भी खैराती भाई ने हीरा भाई को आगाही दे दी थी। किन्तु हीरा भाई ने पाड़े की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया। इसको भैंस के थन से ज्यादा से ज्यादा दूध निकालने में रुचि है, पाड़े को पालने में नहीं। हाँ, पाड़ी हो तो बात अलग है···(पंचायत में हलका कहकहा लगता है। हीरा भाई गर्दन झुका लेता है।)···आप चाहें तो इसके बाड़े में जाकर देख सकते हैं, वहाँ दस-बारह भैंस और पाड़ियाँ मिल जायेंगी किन्तु पाड़ा एक भी नहीं मिलेगा क्योंकि पाड़ा बड़ा होकर दूध तो देता नहीं, फिर चारे-पानी का खर्च क्यों ?···अतः पंचायत हीरा जाट को दोषी ठहराती है।

(किसना बैठ जाता है।)

एक व्यक्ति : (खड़ा होकर) मैं पंचायत के फैसले से सहमत हूँ किन्तु एक अरज है। वह यह कि हीराभाई पर पूरे दो हजार रुपये डालना अन्याय होगा क्योंकि इन्होंने भैंस से कुछ नहीं कमाया। अतः रकम में कुछ रिआयत होनी चाहिए।

(पहला व्यक्ति बैठ जाता है। दूसरा आदमी तुरन्त खड़ा होकर बोलने लगता है।)

दूसरा व्यक्ति : (आवेश में) रिआयत किस बात की ? नन्हें जानवरों को दूध

न पिलाकर निर्दयता पूर्वक मार देने के लिए रिश्रायत ! मैं तो कहता हूँ हीरा जाट ने यह घोर पाप किया है । श्रतः पंचायत से मेरी श्ररज है कि भैंस के धनी को तो उसकी कीमत मिलनी ही चाहिए, साथ ही इस पाप का दण्ड श्रलग से मिलना चाहिए । वरना हीरा के यहाँ पाड़े मरना बन्द नहीं होंगे श्रौर इसका पाप पंचों को भी लगेगा ।

(दूसरा व्यक्ति बैठ जाता है । पंच फिर कानाफूसी करने लगते हैं ।)

किसना : (फिर खड़ा होकर) श्रभी इस भाई ने भी ठीक कहा । पर पंचायत ने सोच-विचार कर इस मामले पर श्रन्तिम फैसला यह दिया है कि हीरा जाट, खैराती मियाँ को दो हजार रुपये भैंस की कीमत के तुरन्त दे दे । साथ में उसे ही नहीं, सभी ग्रामीण भाईयों को यह चेतावनी दी जाती है कि भविष्य में कभी भी किसी के घर पाड़ा मरता है तो दोषी पाये जाने पर उसे पंचायत द्वारा दण्ड दिया जायेगा ।

(सब लोग फैसले पर 'वाह-वाह' कर उठते है ।)

एक व्यक्ति : (ऊंची श्रावाज में) बोलो पंचायत माता की–

सब : (जोर से) जय !!

एक व्यक्ति : (उसी स्वर में) पंचायत के पंचों की–

सब : जय !!

(सब लोग उठ-उठ कर श्रपने-श्रपने घर चले जाते हैं । खैराती श्रौर किसना एक दूसरे को प्रेम श्रौर श्रादर से देखते खड़े रह जाते हैं श्रौर कुछ ही क्षणों में एक दूसरे से लिपट जाते हैं । उनकी श्राँखों में खुशी के श्राँसू हैं ।)

किसना : (खैराती मियाँ से अलग होते हुए) अगर मैं मुख्य पंच न बनाया जाता तो मुझे कभी भी यह मालूम नहीं होता कि पंच के मुख से राम बोलता है और जिंदगी भर तुम्हारा शत्रु ही रहता। किन्तु मुझे अब मालूम पड़ा कि पंच के पद पर बैठने के बाद न कोई उसका मित्र है न शत्रु।



(खैराती मियाँ किसना को फिर गले लगा लेते हैं और आँसू पोंछने लगते हैं।)

हमारे अन्य नवीन प्रकाशन :–

1. श्रेष्ठ शिक्षा-प्रद एकांकी
2. श्रेष्ठ रंग-मंचीय एकांकी
3. श्रेष्ठ सामाजिक एकांकी
4 श्रेष्ठ नवीन एकांकी
5. राजस्थान की लोक-प्रिय लोक कथाएं
6. भारत की लोक-प्रिय लोक कथाएं
7. श्रेष्ठ शिक्षा-प्रद कथाएं
8. रुपहली कथाएं
9. बुद्धिलोक
10. संस्कार

संदर्भ ग्रन्थ -

11. शुद्ध हिन्दी
12. अच्छी हिन्दी
13. अच्छी व्याकरण
14. श्रेष्ठ निबन्ध
15. तीर्थंकर चरित्र

— — —

[redacted]

(उद्देश्य)

ज्ञान की विलुप्त, अनुपलब्ध और अप्रकाशित सामग्री का अनुसंधान और प्रकाशन तथा लोक हितकारी मौलिक साहित्य का निर्माण।